त्याग करो पुण्य कमाओ

आज के युग में व्यक्ति के पास समय नहीं है धर्मलाभ लेने का, पुण्य कमाने का। अत: चातुर्मास के इन चार माह में हम वर्ष भर किये गये कार्यों के लिए ईश्वर से क्षमायाचना करते है और आने वाले समय के लिए पुण्य कमा लेते है; वो भी त्याग करके। धर्म की दृष्टि से चातुर्मास में ही ये त्याग बताये गये है क्योंकि नया पानी और कीड़े मकोड़ों से जीव हिंसा का बंध होता है अत: हिंसा से बचने के लिए इन 4 माह में ज्यादा से ज्यादा त्याग करना चाहिए। विशेषकर सावन और भादो में तो करना ही चाहिए। हम पुण्य कमाने के लिए चातुर्मास में इन नियमों को अपनी दैनिकचर्या में शामिल करना चाहिए–

* देवदर्शन प्रतिदिन करना चाहिए। * जिनवाणी का वाचन एवं श्रवण करना चहिए। * सामायिक प्रति समय करना चाहिए। * उपवास, एकासन आदि करना चाहिए। * ज्ञान आराधना एवं तप करना चाहिए। * जमीकन्द का त्याग करना चाहिए। * हरी पत्तीदार सब्जियों का त्याग भी हो सके तो करना चाहिए। * रात्रि भोजन नहीं करना चाहिए। * थाली में झूठा नहीं छोड़ना चाहिए। * होटल आदि का खाना भी कम से कम 2 माह त्याग करना चाहिए। * संध्या के समय प्रतिक्रमण करना चाहिए। * देवगुरु एवं धर्म के प्रति आस्थावान रहे। * परिग्रह परिमाण का यथासंभव त्याग करना चाहिए।

इन सभी नियमों से अपने कर्मो की निर्जरा करके पुण्य कमाने का अवसर नहीं खोना चाहिए।

रात्रि भोजन का त्याग करना चाहिए। यह हमारे लिए नरक गति का मुख्य द्वार है। आपका जीवन सुखी और सफल बनाना है तो उसके लिए भगवान महावीर कहते है कि जीवन भर रात्रि भोजन का त्याग एवं जमीकन्द का त्याग करना चाहिए नहीं तो रात्रि भोजन एवं जमीकंद आदि के कुसंस्कार वाले अगले भव में जन्म धारण करने क फलस्वरुप अनेक कष्ट दुख और यातनाओं के भागी बनेंगे। यदि रात्रि भोजन एवं जमीकंद छोड़ने से इतने भंयकर दुखो को टाला जा सकता है तो क्यों हम पीछे रहे।

हम पक्षियों को देखे उन्हें किसी धर्म गुरु ने रात्रि भोजन त्याग नहीं कराया परन्तु कुदरती ही ये पशु पक्षी रात्रि भोजन का त्याग देते है रात्रि भोजन करने वाले मनुष्य के पास एक पक्षी जितनी भी समझ नहीं होती है।

हम सब यह जानते है कि सूर्य प्रकाश में जीवों की उत्पत्ति नहीं होती क्योंकि सूर्य का प्रकाश सूक्ष्म जीवों के लिए अवरोधक तत्व है और रात्रि में सूक्ष्म जीवों की उत्पत्ति अधिक मात्रा में होने से सूक्ष्म जीव जंतु भोजन में गिर सकते है और अन्जाने में जीव हिंसा का दोष लग सकता है। अत: हिंसा से बचने के लिए एवं स्वस्थ रहने के लिए रात्रि भोजन जहां तक हो नहीं करना चाहिए।

जीवन में छोटे छोटे त्याग करके हम हमारा और ना जाने कितने जीवों का कल्याण कर सकते है। महावीर प्रभु के बताये मार्ग पर चलकर हम मोक्षपुरी को ओर जल्दी से कदम बढ़ाये। अत: ज्यादा से ज्यादा त्याग करे और अधिक से अधिक पुण्य कमाओं, यही जीवन का सार है।

– डॉ. कीर्ति जैन, खरगोन

चातुर्मास स्थापन कब, कैसे और कहाँ ?

* डॉ. अनेकान्त जैन * साभार – जैन प्रचारक

जैन श्रमण का जीवन अहिंसा प्रधान होता है। अहिंसा महाव्रतधारी जैन मुनि अपनी चर्या से इतनी अधिक सतर्कता रखते हैं कि सूक्ष्म से सूक्ष्म जीवों के भी प्राणों का हनन उनके द्वारा या उनके निमित्त से न हो पाए। वर्षावास भी जैन मुनिचर्या का अनिवार्य और महत्वपूर्ण योग है। इसीलिए इसे वर्षायोग अथवा चातुर्मास कहा जाता है। श्रमणचर्या के दस स्थितिकल्पों में अंतिम पर्युषणा कल्प है। इसके अनुसार मुनि को वर्षाकाल के चार महीने भ्रमण का त्याग करके एक स्थान पर रहने का विधान है। श्रावण, भाद्रपद, आश्विन तथा कार्तिक ये चार माह वर्षा ऋतु के माने जाते हैं। वर्षाकाल में प्राय: भ्रमण या विहार के मार्ग रुक जाते हैं, नदी नाले उमड़ पड़ते हैं। घास फूस आदि अनेक वनस्पतियां अधिक होने लगती हैं तथा मार्गों में फैल जाती हैं। सूक्ष्म स्थूल, छोटे–बड़े जीव जंतु उत्पन्न हो जाते हैं। अत: किसी भी जीव की विराधना और आत्मविराधना (घात) से बचने के लिए जैन धर्म में चार माह तक एक जगह रहने का विधान किया गया है। यह समय एक स्थान पर स्थिर रहने का सबसे उत्कृष्ट समय होता है। मुनि और गृहस्थ दोनों के लिए इस चातुर्मास का धार्मिक तथा अध्यात्मिक विकास की दृष्टि से महत्व है। इसीलिए गृहस्थ मुनिराजों के चातुर्मास को उसी प्रकार प्रिय तथा हितकारी महसूस करते हैं, जिस प्रकार चकवा चंद्रोदय को, कमल सूर्य को और मयूर मेघोदय को।

वर्षायोग धारण करने की विधि – अनगार धर्मामृत नामक मुनिचर्या के ग्रंथ में चातुर्मास स्थापना की विधि का उल्लेख विस्तार से किया गया है। उसके अनुसार आषाढ़ शुक्ल चतुर्दशी की रात्रि के प्रथम प्रहर में चारो दिशाओं में प्रदक्षिणा क्रम से लघु चैत्य भक्ति चार बार पढ़कर सिद्धभक्ति, योगभक्ति, पञ्चगुरुभक्ति और शांतिभक्ति करते हुए आचार्य आदि साधुओं को वर्षायोग ग्रहण करना चाहिए।

कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी की रात्रि के पिछले प्रहर में इसी विधि से वर्षा योग को छोड़ना चाहिए। वर्षा योग के अलावा हेमंत आदि ऋतुओं में अर्थात ऋतुबद्ध काल में श्रमणों का एक स्थान में एक मास तक रुकने का विधान है। जहां चातुर्मास करना अभिष्ट हो वहां आषाढ़ मास में वर्षावास के स्थान पर पहुंच जाना चाहिए तथा मार्गशीर्ष महीना बीतने पर वर्षायोग के स्थान को छोड़ देना चाहिए। कितना ही प्रयोजन होने पर भी वर्षायोग के स्थान में श्रावण कृष्ण चतुर्थी तक अवश्य पहुंच जाना चाहिए। इस तिथि का उल्लंघन नही करना चाहिए। कितना भी जरूरी हो फिर भी कार्तिक शुक्ल पंचमी तक वर्षायोग के स्थान से अन्य स्थान को नहीं जाना चाहिए। यदि किसी दुर्निवार उपसर्ग, विपत्ति आदि के कारण वर्षायोग के उक्त प्रयोग में अतिक्रम करना पड़े तो साधु को प्रायश्चित लेना चाहिए।

आषाढ़ शुक्ल दशमी से चातुर्मास करने वाले कार्तिक की पूर्णमासी के बाद तीस दिन तक आगे भी सकारण एक स्थान पर ठहर सकते हैं; किन्तु विशेष परिस्थितिवश, यथा वर्षा की बहुत अधिकता हो, मार्ग अवरुद्ध हो गए हों, अच्छा शास्त्राभ्यास या वाचना चल रही हो, शक्ति का अभाव हो अथा किसी अन्य रोगी साधक की वैयावृत्ति करनी हो। जैन अनुयायियों की यह तीव्र मनोकामना होती है कि मुनिराजों, आर्यिकाओं, साधु साध्वियों का चातुर्मास उनके नगर में हो। उसका कारण यह है कि चातुर्मास स्थापना से पूरा वातावरण आध्यात्मिक हो जाता है। प्रतिदिन आध्यात्मिक प्रवचनों तथा शास्त्रों की विशेष कक्षाओं से ज्ञान और संस्कार की वृद्धि भी होती है। तरह तरह के धार्मिक अनुष्ठान भी प्रारंभ हो जाते हैं, जिससे लोगों को धर्म लाभ होता है। इसके लिए लोग महीनों पहले से देश में जहां कहीं भी मुनिराज हों उनसे अपने नगर में पधारने तथा चातुर्मास स्थापना करने हेतु निवेदन करने पहुंच जाते हैं। कई कई स्थानों से लोग बहुत बहुत संख्या में आते हैं किन्तु मुनिराज अपनी मर्यादा और संयम साधना के अनुकूल स्थान का ही चयन करते हैं और बहुत विचारपूर्वक ही सही स्थान का चुनाव कर उस स्थान पर चातुर्मास स्थापना हेतु गमन कर जाते हैं।

वर्षायोग धारण कर लेने पर भी आपातकाल जैसी स्थिति होने पर देशान्तर गमन करने का भी शास्त्रों में विधान है, किन्तु वह अपवाद स्वरूप ही है। जैसे दुर्भिक्ष पड़ जाए, कोई महामारी फैल जाए, गांव अथवा प्रदेश में किसी कारण से कोई उथल पुथल हो जाए तो मुनि देशांतर गमन कर सकते हैं क्योंकि ऐसी स्थिति में ऐसे स्थानों पर ठहरने से रत्नत्रय धर्म संयम धर्म की विराधना होने का भय रहता है। अत: आषाढ़ की पूर्णमासी बीतने के बाद प्रतिपदा आदि के दिन देशांतर गमन किया जा सकता है। वर्षावास के दौरान ही काफी व्रत उपवास, विधि–विधान के पर्व भी आते हैं। जैन परम्परा में देव, शास्त्र व गुरु के एक साथ दर्शन को बहुत अधिक सौभाग्य माना जाता है।

देव और शास्त्र तो जिनालय में सदैव मौजूद रहते है किन्तु यदि साक्षात् गुरु भी दर्शन को मिलने लग जाएं तो आध्यात्मिक चेतना और अधिक प्रखर हो उठती है और चातुर्मास में यह सौभाग्य कम से कम चार महीने तो मिल ही जाता है। इसलिए चातुर्मास का विशेष महत्व है।

आमंत्रण...

गोलालारीय समाज के कार्यरत या सेवानिवृत्त प्रशासनिक अधिकारी, डाक्टर, इंजीनियर, सीए / सीएस, प्रोफेसर, वकील, धर्माचार्य, विख्यात कंपनियों के अधिकृत व्यापारीगण, बैंक व अन्य विभागों में कार्यरत देश–विदेश के अधिकारियों की जानकारी संपूर्ण विवरण के साथ **29 नवम्बर 2015** तक अवश्य भेजें।

आप स्वयं या अपने रिश्तेदार और परिचितों का निम्न जानकारियों के साथ – सदस्य का नाम, पत्र व्यवहार का पता, जीवन परिचय, संबंधित क्षेत्र में कार्य विवरण व वार्षिक आय के साथ पासपोर्ट साइज का तात्कालिक फोटो पत्रिका कार्यालय 64, न्यू देवास रोड, या राजेन्द्रकुमार जैन 16, महारानी रोड, इन्दौर पर भेजे। प्राप्त जानकारियों के आधार पर निकट भविष्य में पुस्तक प्रकाशन व सम्मान समारोह कार्यक्रम की रुपरेखा बनाई जा रही है।